

SHRI GOBARDHAN PANIKA

Shri Gobardhan Panika is a master-artisan in tribal weaving from Kotpad, Odisha.

2. Born on April 25, 1952, at Mirgan Street, Adivasi Village Asanga, Nabarangpur District, Odisha, Shri Panika was only 12 years old when he left school and took up the family business of weaving to help his father, and shoulder responsibilities. In 1967 the family moved to Kotpad and ran the business from there.

3. For his intricately woven Kotpad textiles he uses hand-spun cotton yarn which is treated with a back-breaking, month-long dyeing process even before being made a fabric. The dyes are extracts of the Aal tree roots and the shades used are dramatic reds, maroons, rusty pinks, coffee browns and deep blacks. In his own words to weave a chunni (dupatta) it would take a week, and a sari, a month."

4. More than 30 years have gone by since Shri Panika adopted the family business but he continues to work with the same enthusiasm and dedication as he thinks there is a lot more to achieve in life. He has fulfilled numerous orders from boutiques, buyers, online shops and has participated in over 600 exhibitions till date - at Delhi, Mumbai, Hyderabad, Chennai, Bangalore, Kolkata and many other cities.

5. Shri Panika is the recipient of several awards and honours for his immense contribution to weaving. The Government of India conferred on him the "National Award" in 2004. The Ministry of Textiles conferred the Honour of "Sant Kabir" on him for development of Janajati Casbandhi Chunni and his contribution in Handloom sector in 2013. The Ministry of Textiles also gave him the "Certificate of Merit" for his craftsmanship and contribution to the development of Aruna Saree in 1997. Suraj Kund Mela ranked him as one of the most outstanding craftsperson and gave him the Kala Mani Award in 1998.



श्री गोबरधन पानिका

श्री गोबरधन पानिका, कोटपाड, ओडिशा के जनजातीय बुनाई कला के एक सिद्धहस्त कलाकार हैं।

2. आपका जन्म 25 अप्रैल, 1952 में ओडिशा राज्य के नवरंगपुर जिला में स्थित एक आदिवासी गांव - असांगा में मीरगन स्ट्रीट में हुआ था। जब आपकी आयु महज 12 वर्ष की थी, तभी आपने स्कूल छोड़ दिया था और अपने पिता जी की मदद करने के लिए बुनाई कला के अपने पारिवारिक व्यवसाय से जुड़ गए और उस दायित्व को पूर्ण निष्ठा एवं हुनर के साथ बुलन्दियों तक पहुंचाने का कार्य किया। वर्ष 1967 में, आपका परिवार कोटपाड़ में जाकर बस गया और वहीं पर अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने लगा।

3. जटिल बुनाई वाले कोटपाड वस्त्र के लिए आप हाथ से काते गए ऐसे सूती धागे का उपयोग करते हैं जिसे कपड़े का रूप देने से पहले कमर तोड़ देने वाली महीनों लम्बी रंगाई प्रक्रिया से संसाधित किया जाता है। इनके रंग आल ट्री रूट्स के सत्व से बने होते हैं और उनमें उपयोग किए गए छाप उत्तेजक लाल, मरून, हल्का गुलाबी, कॉफी ब्राउन और गहरा काला रंग से बने होते हैं। आपने यह बताया है कि इस अनूठी बुनाई कला में आपको एक चुन्नी (दुपट्टा) तैयार करने में एक सप्ताह और एक साड़ी बनाने में एक माह का समय लग जाता है।

4. आप अपना यह पारिवारिक व्यवसाय 30 वर्ष से अधिक समय से चला रहे हैं किंतु आप अब भी उसी उत्साह और समर्पण के साथ कार्य कर रहे हैं क्योंकि आपका यह मानना है कि इससे भी जीवन में बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। आपने वस्त्रालयों, क्रेताओं और ऑन-लाइन से प्राप्त असंख्य आर्डरों को पूरा किया है और आज तक दिल्ली, मुम्बई, हैदराबाद, चेन्नई, बंगलौर, कोलकाता और बहुत से अन्य शहरों में आयोजित 600 से अधिक प्रदर्शनियों में भाग लिया है।

5. आपको इस बुनाई कला के क्षेत्र अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। भारत सरकार ने वर्ष 2004 में आपको "नेशनल अवार्ड" से सम्मानित किया। वस्त्र मंत्रालय ने आपको जनजातीय कासबंधी विकसित करने और हथकरघा क्षेत्र में आपके इस अनूठे योगदान के लिए वर्ष 2013 में "सन्त कबीर" नामक सम्मान से सुशोभित किया। वस्त्र मंत्रालय द्वारा ही आप को वर्ष 1997 में "अरूणा साड़ी" का विकास करने में आपकी हस्तकला और योगदान के लिए "उत्कृष्टता प्रमाण-पत्र" प्रदान किया गया। सूरजकुंड मेला द्वारा आपको सर्वोत्कृष्ट हस्तशिल्पी" का दर्जा दिया गया है और आपको वर्ष 1998 में कलामणि अवार्ड से विभूषित किया गया है।